# SKPF-Wincompete Test Series 2026

## PART I : खण्ड 2: भारत का इतिहास

### Test 08 - आधुनिक भारत (स्वतंत्रता संघर्ष स्वतंत्रोत्तर आधुनिक भारत )

**आंसर की (Answer Key)**

| प्रश्न | उत्तर | प्रश्न | उत्तर |
|---|---|---|---|
| 1 | A | 11 | B |
| 2 | C | 12 | C |
| 3 | C | 13 | A |
| 4 | B | 14 | B |
| 5 | C | 15 | D |
| 6 | B | 16 | B |
| 7 | B | 17 | C |
| 8 | C | 18 | B |

wincompete

| | | | |
|---|---|---|---|
| 9 | A | 19 | C |
| 10 | C | 20 | C |

| प्रश्न संख्या | सही विकल्प |
|---|---|
| 21 | B |
| 22 | C |
| 23 | C |
| 24 | D |
| 25 | A |
| 26 | B |
| 27 | C |
| 28 | B |
| 29 | B |

wincompete

| | |
|---|---|
| 30 | D |
| 31 | D |
| 32 | A |
| 33 | C |
| 34 | C |
| 35 | A |
| 36 | A |
| 37 | D |
| 38 | D |
| 39 | A |
| 40 | B |

wincompete

| प्रश्न संख्या | सही विकल्प |
|---|---|
| 41 | A |

| | |
|---|---|
| 42 | B |
| 43 | D |
| 44 | B |
| 45 | B |
| 46 | A |
| 47 | B |
| 48 | C |
| 49 | B |
| 50 | D |
| 51 | B |
| 52 | B |
| 53 | A |
| 54 | B |
| 55 | C |

wincompete

| | |
|---|---|
| 56 | C |
| 57 | B |
| 58 | C |
| 59 | C |
| 60 | D |

| प्रश्न संख्या | सही विकल्प | प्रश्न संख्या | सही विकल्प |
|---|---|---|---|
| 61 | A | 71 | A |
| 62 | C | 72 | C |
| 63 | B | 73 | B |
| 64 | C | 74 | A |
| 65 | B | 75 | C |
| 66 | B | 76 | C |
| 67 | D | 77 | A |

wincompete

| | | | |
|---|---|---|---|
| 68 | D | 78 | A |
| 69 | D | 79 | D |
| 70 | A | 80 | A |

| प्रश्न संख्या | सही विकल्प |
|---|---|
| 81 | A |
| 82 | C |
| 83 | B |
| 84 | C |
| 85 | C |
| 86 | A |
| 87 | D |
| 88 | D |
| 89 | A |

wincompete

| | |
|---|---|
| 90 | A |
| 91 | B |
| 92 | D |
| 93 | A |
| 94 | B |
| 95 | A |
| 96 | D |
| 97 | A |
| 98 | C |
| 99 | B |
| 100 | B |

wincompete

# Test 08 - आधुनिक भारत (स्वतंत्रता संघर्ष स्वतंत्रोत्तर आधुनिक भारत )

## उत्तर व्याख्या सहित

### प्रश्न 1: प्रशासन में भारतीयों की भागीदारी

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या**: उदारवादी चरण (1885-1905) के दौरान कांग्रेस ने वैधानिक सुधारों की मांग की थी। इसमें आई.सी.एस. परीक्षा भारत में कराने, परिषदों के विस्तार और न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग करने जैसी महत्वपूर्ण मांगें शामिल थीं। 'पूर्ण स्वराज्य' का लक्ष्य 1885 में नहीं, बल्कि 1929 के लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में घोषित किया गया था। उदारवादी नेता केवल 'स्वशासन' या 'डोमिनियन स्टेटस' की मांग कर रहे थे, इसलिए कथन 3 असत्य है।

### प्रश्न 2: सूरत विभाजन 1907

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या**: सूरत विभाजन का मुख्य कारण स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन का कार्यक्षेत्र और नेतृत्व था। उग्रवादी (तिलक, लाला लाजपत राय) चाहते थे कि इस आंदोलन को बंगाल से बाहर पूरे देश में फैलाया जाए, जबकि उदारवादी इसे केवल बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे। प्रश्न में दिया गया कारण (R) उल्टा लिखा गया है (उग्रवादी विस्तार चाहते थे, न कि उदारवादी)। अतः कथन (A) सत्य है लेकिन कारण (R) असत्य है।

### प्रश्न 3: लखनऊ समझौता 1916

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या**: लखनऊ समझौते के दो मुख्य आयाम थे। पहला, कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता, जिसमें कांग्रेस ने लीग की 'पृथक निर्वाचन पद्धति' की मांग को स्वीकार कर लिया, जो बाद में विवाद का विषय बनी। दूसरा, एनी बेसेंट और तिलक के प्रयासों से उग्रवादियों की कांग्रेस में सात साल बाद पुनः वापसी हुई। ये दोनों निष्कर्ष ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं और इन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान की थी।

### प्रश्न 4: सुमेलन (तिथियाँ)

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या**: कांग्रेस की स्थापना 28 दिसंबर 1885 को हुई थी। बंगाल विभाजन की आधिकारिक घोषणा लॉर्ड कर्जन द्वारा 19 जुलाई 1905 को की गई थी (यह 16 अक्टूबर 1905 को प्रभावी हुआ)। लॉर्ड लिटन ने महारानी विक्टोरिया को 'कैसर-ए-हिंद' की उपाधि देने हेतु 1 जनवरी 1877 को प्रथम दिल्ली दरबार आयोजित किया था। स्वदेशी आंदोलन की औपचारिक घोषणा 7 अगस्त 1905 को कलकत्ता के टाउन हॉल से हुई थी।

### प्रश्न 5: क्रांतिकारी घटनाक्रम (असंगत कथन)

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या**: मुजफ्फरपुर के न्यायाधीश किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस ने 30 अप्रैल 1908 को किया था, न कि 1909 को। इस घटना के बाद प्रफुल्ल चाकी ने आत्महत्या कर ली थी और खुदीराम बोस को सबसे कम उम्र में फाँसी दी गई थी। शेष सभी कथन सही हैं—अनुशीलन समिति बंगाल का प्रमुख संगठन था और वी.डी. सावरकर ने 'मित्र मेला' को ही 1904 में 'अभिनव भारत' में परिवर्तित किया था।

wincompete

**प्रश्न 6: हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA)**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या**: अक्टूबर 1924 में कानपुर में शचींद्रनाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल और योगेश चटर्जी ने HRA की स्थापना की थी। इनका उद्देश्य ब्रिटिश सत्ता को उखाड़कर 'संयुक्त राज्य भारत' (United States of India) बनाना था। 9 अगस्त 1925 को इस संगठन के सदस्यों ने काकोरी में सरकारी खजाना लूटा था। HSRA की स्थापना 1928 में फिरोजशाह कोटला (दिल्ली) में चंद्रशेखर आजाद द्वारा की गई थी।

**प्रश्न 7: चटगांव शस्त्रागार छापा**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या**: अप्रैल 1930 में बंगाल के चटगांव में सरकारी शस्त्रागार पर हमला 'इंडियन रिपब्लिकन आर्मी' के बैनर तले सूर्य सेन (जिन्हें मास्टर दा के नाम से जाना जाता था) ने किया था। उन्होंने एक अस्थायी क्रांतिकारी सरकार का गठन भी किया था। सूर्य सेन एक शिक्षक थे और उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं (जैसे प्रीतिलता वाडेदार और बीना दास) को भी सक्रिय रूप से जोड़ा था।

**प्रश्न 8: भगत सिंह के क्रांतिकारी कार्य**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या**: भगत सिंह ने मार्च 1926 में पंजाब में 'नौजवान भारत सभा' बनाई थी। 8 अप्रैल 1929 को उन्होंने बटुकेश्वर दत्त के साथ केंद्रीय असेंबली में 'बधिरों को सुनाने' के लिए बम फेंका था। जेल में 64 दिनों की भूख हड़ताल के दौरान उनके साथी 'जतिन दास' की मृत्यु हुई थी, भगत सिंह की नहीं। भगत सिंह को 23 मार्च 1931 को लाहौर षड्यंत्र केस के लिए फाँसी दी गई थी।

**प्रश्न 9: असहयोग आंदोलन की वापसी**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या**: 5 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के 'चौरी-चौरा' नामक स्थान पर गुस्साई भीड़ ने पुलिस थाने में आग लगा दी, जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए। गांधीजी, जो अहिंसा के कट्टर समर्थक थे, इस घटना से अत्यंत दुखी हुए। उन्होंने महसूस किया कि देश अभी व्यापक अहिंसक आंदोलन के लिए तैयार नहीं है, इसलिए उन्होंने 12 फरवरी 1922 को बारदोली बैठक में आंदोलन वापस ले लिया।

**प्रश्न 10: सविनय अवज्ञा आंदोलन के परिणाम**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या**: सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) भारत का पहला जन-आंदोलन था जहाँ महिलाओं ने घर की दहलीज लांघकर शराब और विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना दिया। इसी आंदोलन के दबाव में लॉर्ड इरविन को गांधीजी से वार्ता करनी पड़ी, जिसे 'दिल्ली समझौता' या गांधी-इरविन समझौता कहा जाता है। इसके तहत कांग्रेस सविनय अवज्ञा रोकने और लंदन में होने वाले दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने पर सहमत हुई थी।

**प्रश्न 11: गांधीवादी सत्याग्रहों का क्रम**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या**: महात्मा गांधी के प्रारंभिक आंदोलनों का सही कालक्रम इस प्रकार है: चंपारण सत्याग्रह (अप्रैल 1917 - तिनकठिया प्रथा के विरुद्ध), अहमदाबाद मिल हड़ताल (फरवरी-मार्च 1918 - बोनस को लेकर), खेड़ा

सत्याग्रह (मार्च 1918 - लगान माफी हेतु) और अंत में रौलेट एक्ट के विरुद्ध देशव्यापी सत्याग्रह (अप्रैल 1919)। RPSC परीक्षाओं में अक्सर अहमदाबाद और खेड़ा के महीनों में अभ्यर्थियों को भ्रमित किया जाता है।

**प्रश्न 12: भारत छोड़ो आंदोलन (1942)**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या**: भारत छोड़ो आंदोलन को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने 9 अगस्त 1942 की सुबह 'ऑपरेशन जीरो आवर' (Operation Zero Hour) चलाया था, जिसके तहत गांधीजी सहित सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था। 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' 1984 में अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में की गई सैन्य कार्यवाही का नाम था। इस आंदोलन के दौरान बलिया में चित्तू पांडे ने पहली समानांतर सरकार स्थापित की थी।

**प्रश्न 13: अखिल भारतीय किसान सभा**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या**: किसानों के बिखरे हुए आंदोलनों को संगठित करने के उद्देश्य से अप्रैल 1936 में लखनऊ में 'अखिल भारतीय किसान सभा' का गठन हुआ। स्वामी सहजानंद सरस्वती इसके अध्यक्ष और एन.जी. रंगा महासचिव बने। इस सभा ने 'किसान घोषणा पत्र' जारी किया और जमींदारी उन्मूलन की मांग की। इसी अधिवेशन के साथ जवाहरलाल नेहरू ने कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में किसानों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का आह्वान किया।

**प्रश्न 14: भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) की स्थापना**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या**: यद्यपि एम.एन. रॉय ने 1920 में ताशकंद में CPI की स्थापना की थी, लेकिन भारत की धरती पर इसका औपचारिक गठन दिसंबर 1925 में कानपुर में हुए एक कम्युनिस्ट सम्मेलन में हुआ था। इस सम्मेलन की अध्यक्षता 'सत्य भक्त' ने की थी और उन्होंने ही भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल साम्यवाद के प्रचार पर बल दिया था। कानपुर षड्यंत्र केस (1924) भी कम्युनिस्ट नेताओं के दमन से ही संबंधित था।

**प्रश्न 15: जनजातीय विद्रोहों की सत्यता**

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या**: तीनों कथन सत्य हैं। बिरसा मुंडा ने 'दिक्कुओं' (बाहरी लोगों) के विरुद्ध मुंडा विद्रोह का नेतृत्व किया और स्वयं को भगवान का दूत बताया। रम्पा विद्रोह गांधीजी के असहयोग आंदोलन के काल में हुआ था, जहाँ अल्लूरी सीताराम राजू ने गुरिल्ला युद्ध पद्धति अपनाई। संताल विद्रोह 1857 की क्रांति से ठीक पहले का सबसे सशक्त विद्रोह था, जिसने ब्रिटिश सत्ता की नींव हिला दी थी।

**प्रश्न 16: कांग्रेस समाजवादी पार्टी (CSP)**

**सही उत्तर: B**

wincompete

**व्याख्या:** CSP का गठन 1934 में कांग्रेस के भीतर ही समाजवादी विचारधारा के प्रसार के लिए हुआ था। जयप्रकाश नारायण और नरेंद्र देव इसके प्रमुख स्तंभ थे। हालाँकि, वे वामपंथी थे, लेकिन वे कांग्रेस को तोड़ना या उसे पूर्णतः कम्युनिस्ट दल बनाना नहीं चाहते थे। उनका उद्देश्य कांग्रेस को किसान-मजदूरों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाना और राष्ट्रीय आंदोलन को समाजवादी दिशा प्रदान करना था।

**प्रश्न 17: आजाद हिंद फौज (INA)**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** INA की स्थापना का विचार सबसे पहले कैप्टन मोहन सिंह ने दिया था, जब वे द्वितीय विश्व युद्ध में जापानियों द्वारा युद्धबंदी बनाए गए थे। बाद में रासबिहारी बोस ने इसकी कमान सुभाष चंद्र बोस को सौंपी। युद्ध के बाद INA के अधिकारियों (शाहनवाज खान, सहगल, ढिल्लों) पर लाल किले में मुकदमा चला। नेहरू और भुलाभाई देसाई ने उनकी पैरवी की, जिससे देशभर में देशभक्ति की लहर दौड़ गई थी।

**प्रश्न 18: कैबिनेट मिशन 1946 के सदस्य**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** कैबिनेट मिशन मार्च 1946 में भारत आया था। इसके तीन सदस्य ब्रिटिश कैबिनेट के मंत्री थे: लॉर्ड पैथिक लॉरेंस (भारत सचिव), सर स्टैफोर्ड क्रिप्स (व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष) और ए.वी. अलेक्जेंडर (नौसेना के प्रथम लॉर्ड)। इस मिशन ने पाकिस्तान की मांग को खारिज कर दिया था और एक संघीय ढांचे तथा संविधान सभा के गठन का प्रस्ताव रखा था।

**प्रश्न 19: भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 ने देशी रियासतों को यह विकल्प दिया था कि वे भारत डोमिनियन या पाकिस्तान डोमिनियन में शामिल हो सकती हैं, अथवा वे स्वतंत्र भी रह सकती हैं (तकनीकी रूप से)। उन पर किसी भी संघ में शामिल होने की 'अनिवार्यता' नहीं थी। यह रियासतों के एकीकरण में एक बड़ी चुनौती थी, जिसे बाद में सरदार पटेल ने अपनी कूटनीति से सुलझाया।

**प्रश्न 20: माउंटबेटन योजना और विभाजन**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** 3 जून योजना के अनुसार, पंजाब और बंगाल की विधानसभाओं को दो समूहों (मुस्लिम बहुल और गैर-मुस्लिम बहुल) में विभाजित होकर मतदान करना था। यदि किसी भी समूह का बहुमत विभाजन के पक्ष में होता, तो उन प्रांतों का बंटवारा तय माना जाता। इसी मतदान के आधार पर दोनों प्रांतों का विभाजन हुआ और सीमा निर्धारण हेतु रेडक्लिफ आयोग का गठन किया गया था।

**प्रश्न: 21**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** महात्मा गांधी का 'ट्रस्टीशिप' (न्यासधारिता) सिद्धांत एक विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक अवधारणा है। इसके अनुसार, धनी व्यक्तियों को अपनी संपत्ति का उपभोग केवल अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं के लिए करना चाहिए और शेष संपत्ति को समाज की धरोहर (Trust) मानकर उसका उपयोग सार्वजनिक कल्याण के लिए करना चाहिए। गांधीजी पूंजीपतियों को नष्ट करने के पक्ष में नहीं थे, बल्कि उनके हृदय परिवर्तन के माध्यम से समाज में आर्थिक विषमता को दूर करना चाहते थे। यह सिद्धांत वर्ग संघर्ष के मार्क्सवादी विचार के विरुद्ध 'वर्ग सहयोग' पर आधारित है।

wincompete

**प्रश्न: 22**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** कथन (A) सत्य है क्योंकि गांधीजी ने 1937 में वर्धा सम्मेलन में अपनी बुनियादी शिक्षा योजना 'नई तालीम' प्रस्तुत की थी। हालांकि, कारण (R) असत्य है क्योंकि इस योजना का उद्देश्य बच्चों को हस्तशिल्प आधारित शिक्षा देना था ताकि वे स्वावलंबी बन सकें। यह शिक्षा मातृभाषा में देने और शारीरिक श्रम के प्रति

सम्मान पैदा करने पर केंद्रित थी, न कि अंग्रेजी भाषा या पश्चिमी संस्कृति के प्रचार पर। यह शिक्षा हाथ, हृदय और मस्तिष्क (3H) के समन्वय पर आधारित थी।

**प्रश्न: 23**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** कथन 1 और 2 सत्य हैं। गांधीजी ने 1932 के पूना समझौते के बाद अस्पृश्यता के विरुद्ध व्यापक अभियान चलाया और 'अस्पृश्यता निवारण संघ' बनाया। उन्होंने यरवदा जेल से 'हरिजन' पत्र निकाला। कथन 3 पूर्णतः असत्य है क्योंकि गांधीजी अस्पृश्यता को हिंदू धर्म पर एक कलंक मानते थे और इसे समूल नष्ट करने के पक्षधर थे। उन्होंने निचली जातियों को 'हरिजन' (ईश्वर की संतान) नाम दिया ताकि समाज में उनके प्रति सम्मान और गरिमा की भावना जागृत हो सके।

**प्रश्न: 24**

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** ट्रस्टीशिप का सिद्धांत गांधीजी द्वारा 1942 में नहीं, बल्कि दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद से ही विभिन्न समय पर प्रतिपादित किया गया था, विशेषकर उनके सामाजिक-आर्थिक विमर्श के प्रारंभिक दौर में। अन्य विकल्प सही हैं: पूना समझौता गांधी-अंबेडकर के बीच यरवदा जेल में हुआ। वर्धा सम्मेलन हस्तशिल्प शिक्षा के लिए था। हरिजन सेवक संघ की स्थापना के बाद उद्योगपति घनश्यामदास बिड़ला को इसका प्रथम अध्यक्ष नियुक्त किया गया था ताकि सवर्ण हिंदू इस कार्य में सक्रिय सहयोग दें।

**प्रश्न: 25**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** रियासतों के विलय की विधियाँ ऐतिहासिक रूप से भिन्न थीं। जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान भाग गया था, जिसके बाद फरवरी 1948 में वहां 'जनमत संग्रह' कराया गया। हैदराबाद का निज़ाम स्वतंत्र रहना चाहता था, जिसे 'ऑपरेशन पोलो' नामक सैन्य कार्यवाही (सितंबर 1948) द्वारा भारत में मिलाया गया। कश्मीर के राजा हरि सिंह ने पाकिस्तानी आक्रमण के समय 'विलेय पत्र' पर हस्ताक्षर किए। जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह पाकिस्तान जाने पर विचार कर रहे थे, जिन्हें पटेल और वी.पी. मेनन ने कूटनीतिक रूप से समझाया।

**प्रश्न: 26**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** हैदराबाद के निज़ाम उस्मान अली खान के विरुद्ध की गई सैन्य कार्यवाही का कोड नाम 'ऑपरेशन पोलो' था। यह कार्यवाही 13 सितंबर 1948 को प्रारंभ हुई और 17 सितंबर को निज़ाम के आत्मसमर्पण के साथ समाप्त हुई। निज़ाम की निजी सेना 'रजाकार' जनता पर भीषण अत्याचार कर रही थी। हैदराबाद के विलय के बाद ही भारत का राजनैतिक मानचित्र संगठित हो सका। ऑपरेशन विजय गोवा की मुक्ति (1961) से संबंधित है, जबकि ऑपरेशन शक्ति 1998 के परमाणु परीक्षण का नाम था।

wincompete

**प्रश्न: 27**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** सरदार पटेल की एकीकरण नीति अत्यंत व्यवहारिक थी। वे जानते थे कि बिना राजाओं के सहयोग के भारत विखंडित हो सकता है। इसलिए उन्होंने 'प्रिवी पर्स' (राजभत्ता) का प्रलोभन दिया ताकि वे स्वेच्छा से लोकतांत्रिक व्यवस्था में शामिल हों। निष्कर्ष 1 सही है क्योंकि पटेल की सर्वोच्च प्राथमिकता अखंड भारत का

निर्माण था। निष्कर्ष 2 भी सही है क्योंकि अधिकांश रियासतों ने 15 अगस्त 1947 से पूर्व ही विलेय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए थे। यह पटेल की महानतम कूटनीतिक जीत थी।

**प्रश्न: 28**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** रियासती विभाग का गठन 5 जुलाई 1947 को किया गया था, जिसके अध्यक्ष सरदार वल्लभभाई पटेल थे और वी.पी. मेनन को इसका सचिव बनाया गया था। वी.पी. मेनन एक अनुभवी सिविल सेवक थे जिन्होंने प्रत्येक रियासत के लिए 'विलेय पत्र' और 'स्टैंडस्टिल एग्रीमेंट' का मसौदा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पटेल और मेनन की जोड़ी ने ही लगभग 562 रियासतों का भारत में विलय संभव बनाया। मेनन ने इस पूरी प्रक्रिया पर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'The Story of the Integration of the Indian States' लिखी है।

**प्रश्न: 29**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** कथन (A) सत्य है। सुभाष चंद्र बोस ने 1939 में गांधीजी के साथ वैचारिक मतभेदों के बाद 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की थी। कारण (R) पूर्णतः असत्य है। बोस का मानना था कि ब्रिटेन की आपदा (द्वितीय विश्व युद्ध) भारत के लिए अवसर है। वे अंग्रेजों को युद्ध में सहायता देने के विरुद्ध थे और चाहते थे कि भारत इस संकट का लाभ उठाकर अंग्रेजों को सैन्य दबाव और जन-आंदोलन के माध्यम से भारत छोड़ने पर विवश कर दे।

**प्रश्न: 30**

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** सुभाष चंद्र बोस ने 1943 में सिंगापुर में अस्थायी भारत सरकार (आरजी हुकुमत-ए-आजाद हिंद) की घोषणा की, जिसे 9 देशों ने मान्यता दी। उन्होंने 'दिल्ली चलो' का आह्वान किया ताकि ब्रिटिश सेना पर भारत की सीमा से आक्रमण किया जा सके। आजाद हिंद फौज में 'रानी झाँसी रेजिमेंट' का गठन महिलाओं के लिए किया गया था, जिसका नेतृत्व कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने किया। ये तीनों तथ्य सुभाष चंद्र बोस के विदेशों में किए गए क्रांतिकारी प्रयासों की सफलता को दर्शाते हैं।

**प्रश्न: 31**

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** आजाद हिंद फौज (INA) की मूल स्थापना का विचार 1942 में दक्षिण-पूर्व एशिया (मलया) में कैप्टन मोहन सिंह द्वारा दिया गया था, न कि जर्मनी में सुभाष चंद्र बोस द्वारा। बोस ने बाद में सिंगापुर में इसकी कमान संभाली। अन्य विकल्प सही हैं: हरिपुरा अधिवेशन में वे निर्विरोध अध्यक्ष बने। त्रिपुरी में उन्होंने गांधीजी के समर्थित उम्मीदवार सीतारमैया को हराया। उन्होंने ही सिंगापुर रेडियो से गांधीजी को 'राष्ट्रपिता' कहकर संबोधित किया था, जो उनके मध्य आपसी सम्मान का परिचायक है।

**प्रश्न: 32**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** रासबिहारी बोस एक अनुभवी क्रांतिकारी थे जो जापान में रहकर भारतीय स्वतंत्रता के लिए कार्य कर रहे थे। कैप्टन मोहन सिंह वह ब्रिटिश भारतीय सैनिक थे जिनके मन में सबसे पहले आजाद हिंद फौज का विचार आया। सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस छोड़ने के बाद 'फॉरवर्ड ब्लॉक' बनाया। आजाद हिंद सरकार की स्थापना

wincompete

सिंगापुर में की गई थी। इन व्यक्तित्वों ने मिलकर विदेशों में भारतीय स्वतंत्रता का दूसरा मोर्चा खोला था, जिसने ब्रिटिश सत्ता की सैन्य नींव को हिलाकर रख दिया था।

**प्रश्न: 33**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** भीकाजी रुस्तम कामा एक पारसी क्रांतिकारी महिला थीं। उन्होंने 1907 में जर्मनी के स्टटगार्ट में तिरंगा फहराया, जो भारत का पहला ध्वज माना जाता है (हालांकि वर्तमान तिरंगे से भिन्न था)। उन्होंने पेरिस से 'वंदे मातरम' पत्रिका भी निकाली। उन्हें 'भारतीय क्रांति की माता' (Mother of Indian Revolution) कहा जाता है। उन्होंने यूरोप और अमेरिका में भारतीय स्वाधीनता के लिए कड़ा संघर्ष किया और श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे क्रांतिकारियों के साथ मिलकर कार्य किया।

**प्रश्न: 34**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** एनी बेसेंट एक आयरिश महिला थीं जो थिओसोफिकल सोसाइटी के माध्यम से भारत आईं। उन्होंने 1916 में मद्रास में होम रूल लीग की स्थापना की, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन प्राप्त करना था। वे 1917 के कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष बनीं। निष्कर्ष 2 भी सही है क्योंकि वे पहली विदेशी महिला थीं जिन्होंने भारतीय राजनीति के शीर्ष स्तर पर सक्रिय और निर्णायक नेतृत्व प्रदान किया, जिससे महिलाओं की भागीदारी बढ़ी।

**प्रश्न: 35**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** मई 1930 में जब नमक सत्याग्रह के दौरान महात्मा गांधी को गिरफ्तार कर लिया गया, तो सरोजिनी नायडू ने धरसाना (गुजरात) के नमक कारखाने पर अहिंसक आक्रमण का नेतृत्व किया। अमेरिकी पत्रकार वेब मिलर ने इस घटना का भीषण चित्रण किया था जहाँ ब्रिटिश पुलिस ने निहत्थे सत्याग्रहियों पर लाठियां बरसाई थीं। सरोजिनी नायडू 1925 में कानपुर अधिवेशन में कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष भी बनी थीं। उन्हें 'भारत कोकिला' (Nightingale of India) कहा जाता है।

**प्रश्न: 36**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** अरुणा आसफ अली ने 9 अगस्त 1942 को मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान (अब अगस्त क्रांति मैदान) में तिरंगा फहराकर भारत छोड़ो आंदोलन की औपचारिक शुरुआत की थी, क्योंकि उस समय लगभग सभी शीर्ष नेताओं को 'ऑपरेशन जीरो आवर' के तहत गिरफ्तार कर लिया गया था। उन्होंने आंदोलन के दौरान भूमिगत रहकर (Underground) संघर्ष को जारी रखा। यही कारण है कि उन्हें 'अगस्त क्रांति की नायिका' कहा जाता है। कथन और कारण दोनों सत्य हैं और सही व्याख्या करते हैं।

**प्रश्न: 37**

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** ये तीनों कथन राजस्थान के स्वतंत्रता संघर्ष के अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य हैं। विजय सिंह पथिक ने बिजोलिया आंदोलन को राष्ट्रीय पहचान दिलाई। गोविंद गिरी ने भील समुदाय के उत्थान के लिए सम्प सभा बनाई और मानगढ़ धाम की घटना उनके संघर्ष का चरम थी। जयनारायण व्यास ने 'पोपाबाई की पोल' और

wincompete

'मारवाड़ की अवस्था' जैसी पुस्तिकाओं के माध्यम से जोधपुर रियासत के भ्रष्टाचार को उजागर किया। व्यास जी ने 'आगीवाण' और 'पीप' जैसे समाचार पत्रों का संपादन भी किया था।

**प्रश्न: 38**

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** विकल्प D असंगत है क्योंकि कानपुर से प्रकाशित 'प्रताप' समाचार पत्र का संपादन गणेश शंकर विद्यार्थी ने किया था, जयनारायण व्यास ने नहीं। विजय सिंह पथिक ने बिजोलिया आंदोलन को प्रसिद्ध करने के लिए विद्यार्थी जी से ही 'प्रताप' में लेख लिखवाए थे। अन्य विकल्प सही हैं: हीरालाल शास्त्री राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री बने और उन्होंने 'प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः' गीत लिखा। माणिक्य लाल वर्मा ने 'पंछिड़ा' गीत के माध्यम से किसानों में जोश भरा। गोविंद गिरी मानगढ़ नरसंहार के मुख्य साक्षी रहे।

**प्रश्न: 39**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** बिजोलिया किसान आंदोलन का नेतृत्व साधु सीताराम दास के बाद विजय सिंह पथिक ने किया। एकी आंदोलन (भीलों और आदिवासियों का आंदोलन) का नेतृत्व मोतीलाल तेजावत ने किया। भगत आंदोलन गोविंद गिरी द्वारा चलाया गया था। राजस्थान सेवा संघ की स्थापना 1919 में वर्धा में विजय सिंह पथिक, रामनारायण चौधरी और हरिभाई किंकर द्वारा की गई थी। इन संगठनों और नेताओं ने राजस्थान की सामंती व्यवस्था के विरुद्ध जनता को संगठित करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी।

**प्रश्न: 40**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** भोगीलाल पंड्या को 'वागड़ के गांधी' के रूप में जाना जाता है। उन्होंने डूंगरपुर और बांसवाड़ा (वागड़) क्षेत्र में आदिवासियों की शिक्षा और दलितों के उद्धार के लिए 'वागड़ सेवा मंदिर' की स्थापना की। उन्होंने डूंगरपुर प्रजामंडल (1944) की स्थापना में भी मुख्य भूमिका निभाई। राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्वों को उनके उपनामों से जाना जाता है, जैसे जयनारायण व्यास को 'शेर-ए-राजस्थान' और गोकुल भाई भट्ट को 'राजस्थान का गांधी' कहा जाता है।

## व्याख्या (Explanations)

**प्रश्न: 41.विलेय पत्र (IoA) के प्रावधान**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या**: 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेसिबिलिटी' वह वैधानिक दस्तावेज था जिसके माध्यम से राजाओं ने भारतीय संघ में प्रवेश किया। इसके तहत केवल रक्षा, विदेश और संचार विषयों को केंद्र को सौंपा गया था। कथन 2 सत्य है कि बीकानेर के महाराजा शार्दुल सिंह सबसे पहले हस्ताक्षर करने वाले थे। कथन 3 गलत है क्योंकि प्रारंभ में राजाओं को अपनी आंतरिक संप्रभुता और शासन बनाए रखने का आश्वासन दिया गया था, यह पूर्ण प्रशासनिक विलय नहीं था।

**प्रश्न: 42.शरणार्थी समस्या और पुनर्वास मंत्रालय**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या**: कथन और कारण दोनों स्वतंत्र रूप से सत्य हैं, लेकिन कारण कथन की पूर्ण व्याख्या नहीं करता। शरणार्थी समस्या के समाधान में केवल मंत्रालय का गठन ही पर्याप्त नहीं था, बल्कि विस्थापितों के सामाजिक और आर्थिक पुनर्वास की विशाल चुनौती भी शामिल थी। पुनर्वास मंत्रालय ने शरणार्थियों को ऋण और भूमि आवंटित कर उन्हें समाज की मुख्यधारा में जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया था।

**प्रश्न: 43.प्रिवी पर्स की समाप्ति**

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** विकल्प D असंगत है क्योंकि प्रिवी पर्स को वर्ष 1971 में 26वें संविधान संशोधन द्वारा समाप्त किया गया था, न कि 1969 के 24वें संशोधन द्वारा। प्रिवी पर्स राजाओं को उनकी रियासतों के विलय के बदले दिया जाने वाला एक वार्षिक भत्ता था। संविधान के अनुच्छेद 291 और 362 इसे सुरक्षा प्रदान करते थे। इसे इंदिरा गांधी सरकार द्वारा "समानता के अधिकार" के आधार पर समाप्त किया गया था।

**प्रश्न: 44.विस्थापितों हेतु 'निष्क्रांत संपत्ति' का समाधान**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** जो लोग विभाजन के समय भारत छोड़कर पाकिस्तान चले गए थे, उनकी संपत्ति को 'निष्क्रांत संपत्ति' कहा गया। शरणार्थी समस्या के समाधान हेतु सरकार ने इस संपत्ति का उपयोग पाकिस्तान से आए शरणार्थियों को बसाने के लिए किया। उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में खेती योग्य भूमि और शहरी क्षेत्रों में आवास के साथ-साथ लघु उद्योगों के लिए ऋण प्रदान किया गया ताकि वे पुनः आत्मनिर्भर हो सकें।

**प्रश्न: 45.**भाषाई पुनर्गठन के प्रति केंद्र का दृष्टिकोण

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** कथन 1 गलत है क्योंकि एस.के. धर आयोग (1948) ने भाषाई आधार का विरोध करते हुए 'प्रशासनिक सुविधा' को प्राथमिकता दी थी। जे.वी.पी. समिति (1948) ने भी राष्ट्र की अखंडता को ध्यान में रखते हुए भाषाई राज्यों की मांग को फिलहाल टालने की सिफारिश की थी। सरकार को भय था कि इससे भाषाई कट्टरता बढ़ेगी और देश छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट जाएगा, जिसे 'बाल्कनीकरण' कहा जाता है।

**प्रश्न: 46.**आयोगों का कालक्रम

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** एस.के. धर आयोग जून 1948 में बना। इसके बाद दिसंबर 1948 के जयपुर अधिवेशन में जे.वी.पी. समिति बनी। पोट्टी श्रीरामुलु के निधन के बाद दिसंबर 1952 में प्रधानमंत्री नेहरू ने प्रथम भाषाई राज्य (आंध्र) की घोषणा की। व्यापक समाधान हेतु दिसंबर 1953 में फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग (SRC) का गठन किया गया था। तिथियों का यह क्रम RPSC परीक्षाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

**प्रश्न: 47.जे.वी.पी. समिति का स्वरूप**

wincompete

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** कथन और कारण दोनों सत्य हैं, लेकिन यहाँ कारण (सदस्यों के नाम) कथन (भाषाई आधार को टालना) की सही व्याख्या नहीं करता। समिति ने भाषाई आधार को इसलिए टाला था क्योंकि देश विभाजन की त्रासदी से गुजर रहा था और केंद्र की प्राथमिकता आंतरिक सुरक्षा थी। सदस्यों के नामों के पहले अक्षर (J-V-P) से ही इस समिति का नाम पड़ा था, जो कांग्रेस की एक अनौपचारिक उच्च स्तरीय समिति थी।

**प्रश्न: 48.भाषाई राज्यों के विरोध का आधार**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** दोनों निष्कर्ष सत्य हैं। नेहरू और पटेल जैसे नेताओं का मानना था कि भारत को पहले एक 'राजनैतिक इकाई' के रूप में स्थिर होना चाहिए। भाषाई आधार पर विभाजन से प्रशासनिक जटिलताएं बढ़तीं और विकास की गति धीमी हो जाती। साथ ही, क्षेत्रीय अस्मिता के हावी होने से राष्ट्रीय एकता के कमजोर होने का प्रबल डर था। इसलिए केंद्र ने प्रारंभिक वर्षों में भाषाई राज्यों की मांग का कड़ा विरोध किया था।

**प्रश्न: 49.प्रथम भाषाई राज्य आंध्र प्रदेश**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 1 अक्टूबर 1953 को मद्रास राज्य से अलग होकर जब आंध्र राज्य (वर्तमान आंध्र प्रदेश) बना, तब उसकी राजधानी 'कर्नूल' को बनाया गया था। बाद में 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम के बाद हैदराबाद को इसकी राजधानी बनाया गया। यह राज्य पोट्टी श्रीरामुलु के 56 दिनों के बलिदान के परिणामस्वरूप बना था। यह भाषाई आधार पर गठित होने वाला स्वतंत्र भारत का पहला राज्य था।

**प्रश्न: 50.राज्य पुनर्गठन आयोग (SRC) के सदस्य**

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** विकल्प D असंगत है क्योंकि वी.पी. मेनन राज्य पुनर्गठन आयोग (1953) के सदस्य नहीं थे। इस आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति फजल अली थे और दो अन्य सदस्य के.एम. पणिक्कर (बीकानेर रियासत के पूर्व पीएम) और एच.एन. कुंजरू थे। वी.पी. मेनन का मुख्य योगदान रियासतों के एकीकरण के समय 'रियासती विभाग' के सचिव के रूप में था, न कि भाषाई पुनर्गठन के आयोग के सदस्य के रूप में।

**प्रश्न: 51.SRC की सिफारिशें**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** कथन 1 गलत है क्योंकि आयोग ने 'एक भाषा-एक राज्य' के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया था। उसने माना था कि राज्यों का आधार भाषा के साथ-साथ प्रशासनिक और आर्थिक भी होना चाहिए। कथन 2 और 3 सत्य हैं; आयोग ने राज्यों की चार श्रेणियों (A, B, C, D) को खत्म करने और 16 राज्यों व 3 UTs की सिफारिश की थी। हालाँकि, 1956 के अधिनियम में 14 राज्य और 6 UTs बनाए गए।

**प्रश्न: 52.पोट्टी श्रीरामुलु का अनशन**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** पोट्टी श्रीरामुलु एक गांधीवादी कार्यकर्ता थे जिन्होंने तेलुगु भाषियों के लिए पृथक आंध्र राज्य की मांग करते हुए मद्रास में अनशन किया था। 15 दिसंबर 1952 को 56 दिनों के अनशन के बाद उनका निधन हो गया। उनके निधन से उत्पन्न व्यापक जन-आक्रोश और हिंसा के कारण केंद्र सरकार को अंततः घुटने टेकने पड़े और भाषाई आधार पर आंध्र राज्य के निर्माण की आधिकारिक घोषणा करनी पड़ी।

**प्रश्न: 53.मत्स्य संघ का गठन (चरण-1)**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** मत्स्य संघ का गठन 18 मार्च 1948 को हुआ, जिसमें अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली शामिल थे। उद्घाटन एन.वी. गाडगिल ने किया। विकल्प B गलत है क्योंकि धौलपुर के उदयभान सिंह 'राजप्रमुख' थे,

wincompete

जबकि प्रधानमंत्री 'शोभाराम कुमावत' (अलवर) थे। विकल्प C गलत है क्योंकि राजधानी अलवर थी। विकल्प D गलत है क्योंकि इसमें टोंक नहीं, बल्कि करौली रियासत शामिल थी।

**प्रश्न: 54.राजस्थान एकीकरण का कालक्रम**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** संयुक्त राजस्थान 18 अप्रैल 1948 को बना (मेवाड़ विलय)। वृहद् राजस्थान 30 मार्च 1949 को बना (4 बड़ी रियासतें - JJBJ)। संयुक्त वृहद् राजस्थान 15 मई 1949 को बना (मत्स्य संघ का विलय)। पुनर्गठित राजस्थान 1 नवंबर 1956 को अस्तित्व में आया जब अजमेर-मेरवाड़ा और आबू का विलय हुआ। तिथियों का यह क्रम राजस्थान की प्रशासनिक और राजनैतिक भौगोलिक एकता का आधार है।

**प्रश्न: 55.राजप्रमुख पद की समाप्ति**

**सही उत्तर: C) A सत्य है, लेकिन R असत्य है।**

**कथन (A) (सत्य):** 1 नवंबर 1956 को राजस्थान के एकीकरण का सातवाँ और अंतिम चरण पूर्ण हुआ। इस तिथि को **7वें संविधान संशोधन अधिनियम (1956)** के प्रभावी होने के साथ ही 'राजप्रमुख' का पद पूरी तरह समाप्त कर दिया गया। इसके स्थान पर राज्य के सर्वोच्च संवैधानिक प्रमुख के रूप में **'राज्यपाल' (Governor)** का पद सृजित किया गया। श्री गुरुमुख निहाल सिंह राजस्थान के पहले राज्यपाल बने।

**कारण (R) (असत्य):** यह कारण तकनीकी रूप से गलत है। राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 और 7वें संविधान संशोधन के तहत राज्यों की पुरानी श्रेणियों (A, B, C और D) को **समाप्त (Abolish) किया गया था**, न कि उनके अनुसार राज्यपाल पद का सृजन किया गया था।

1956 से पहले भारत में राज्य अलग-अलग श्रेणियों में बंटे थे (जैसे राजस्थान 'B' श्रेणी का राज्य था)। 1956 के सुधारों का मुख्य उद्देश्य ही इन श्रेणियों के भेदभाव को मिटाकर सभी राज्यों को समान संवैधानिक स्तर पर लाना और 'राज्यपाल' व्यवस्था को एकसमान लागू करना था।

**प्रश्न: 56.राजस्थान में अजमेर-सुनेल टप्पा विलय**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** दोनों निष्कर्ष सत्य हैं। अजमेर-मेरवाड़ा प्रारंभ में 'C' श्रेणी का राज्य था, जिसका राजस्थान में विलय फजल अली आयोग के सुझाव पर 1 नवंबर 1956 को हुआ। इसी चरण में मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले का 'सुनेल टप्पा' राजस्थान के झालावाड़ में मिलाया गया और राजस्थान के कोटा जिले का 'सिरोंज' क्षेत्र मध्य प्रदेश को दिया गया। यह राज्यों की सीमाओं का अंतिम भाषाई और प्रशासनिक समायोजन था।

**प्रश्न: 57.बॉम्बे राज्य का विभाजन (1960)**

**सही उत्तर: B**

wincompete

**व्याख्या:** वर्ष 1960 में 'महागुजरात आंदोलन' और 'संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन' के दबाव में द्विभाषी बॉम्बे राज्य का विभाजन हुआ। मराठी भाषी क्षेत्रों से महाराष्ट्र बना और गुजराती भाषी क्षेत्रों से 'गुजरात' का निर्माण हुआ। गुजरात भारतीय संघ का 15वाँ राज्य बना। यह विभाजन 1 मई 1960 को प्रभावी हुआ। यह भाषाई आधार पर होने वाला 1956 के बाद का पहला बड़ा राजनैतिक परिवर्तन था।

**प्रश्न:58. राज्यों के गठन का वर्ष**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** नागालैंड 1963 में बना (असम से अलग)। पंजाब-हरियाणा का विभाजन 1966 में हुआ (हिंदी बनाम पंजाबी)। 1972 में पूर्वोत्तर क्षेत्र पुनर्गठन अधिनियम द्वारा मेघालय, मणिपुर और त्रिपुरा को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला। सिक्किम 1974 में सह-राज्य और 1975 में 36वें संशोधन द्वारा भारत का पूर्ण राज्य बना। यह क्रम आधुनिक भारत के मानचित्र के क्रमिक विकास को दर्शाता है।

**प्रश्न: 59.पंजाब पुनर्गठन 1966**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** विकल्प C असंगत है क्योंकि हिमाचल प्रदेश को 1966 में केवल केंद्र शासित प्रदेश (UT) का दर्जा दिया गया था, न कि पूर्ण राज्य का। हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा वर्ष 1971 में प्राप्त हुआ था। 1966 के विभाजन में शाह आयोग की भूमिका मुख्य थी, जिसने भाषाई आधार पर पंजाब (पंजाबी) और हरियाणा (हिंदी) का सीमांकन किया और चंडीगढ़ को साझा राजधानी बनाया।

**प्रश्न: 60.पूर्वोत्तर एवं सिक्किम विलय**

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** तीनों कथन सत्य हैं। नागालैंड को उग्रवाद शांत करने हेतु विशेष संवैधानिक सुरक्षा दी गई। 1972 में UT बने मिजोरम और अरुणाचल को 1987 में पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया। सिक्किम का विलय भारतीय लोकतंत्र की बड़ी जीत थी, जहाँ जनमत संग्रह के माध्यम से चोग्याल शासन को समाप्त कर उसे 22वें राज्य के रूप में भारत में समाहित किया गया।

**प्रश्न 61: सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** पंडित नेहरू का समाजवाद 'लोकतांत्रिक' था, न कि तानाशाही। उन्होंने उत्पादन के साधनों पर राज्य के नियंत्रण के साथ-साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजी संपत्ति (सीमित रूप में) को महत्व दिया, इसीलिए 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' को चुना गया। कथन 3 गलत है क्योंकि नेहरू की धर्मनिरपेक्षता 'धर्म-विरोधी' नहीं थी, बल्कि इसका अर्थ 'सर्वधर्म समभाव' और राज्य का किसी विशेष धर्म के प्रति झुकाव न होना था। वे धर्म को व्यक्तिगत विषय मानते थे।

**प्रश्न 62: सही उत्तर: C) A सत्य है, लेकिन R असत्य है।**

**कथन (A) (सत्य):** पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारी उद्योगों, भाखड़ा-नांगल जैसे बड़े बांधों, बिजली परियोजनाओं और इस्पात संयंत्रों (Steel Plants) को 'आधुनिक भारत के मंदिर' (Temples of Modern India) कहा था। वे मानते थे कि ये परियोजनाएँ देश से गरीबी, भुखमरी मिटाने और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के आधुनिक केंद्र हैं।

**कारण (R) (असत्य):** यह कारण नेहरू के मूल विचार के पूर्णतः विपरीत और भ्रामक है। नेहरू ने इन बांधों को 'मंदिर' इसलिए नहीं कहा था कि वे भारतीय जनमानस की 'पारंपरिक श्रद्धा और भक्ति की संस्कृति' को मान्यता देना चाहते थे। इसके विपरीत, उनका उद्देश्य लोगों के दृष्टिकोण को धर्म, अंधविश्वास और भाग्यवादिता से दूर हटाकर कर्म, विज्ञान और तार्किक प्रगति की ओर मोड़ना था।

वे चाहते थे कि लोग पत्थरों के पुराने मंदिरों की तरह ही इन आधुनिक बांधों और फैक्ट्रियों को राष्ट्र निर्माण के वास्तविक पवित्र स्थल के रूप में देखें, जहाँ मानवीय श्रम और विज्ञान से चमत्कार होते हैं, न कि अंधश्रद्धा से। अतः कारण (R) पूरी तरह असत्य है।

wincompete

**प्रश्न 63: सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 'उद्देश्य प्रस्ताव' (Objective Resolution) को नेहरू ने संविधान सभा में प्रस्तुत किया था। इसमें भारत को एक स्वतंत्र, संप्रभु, गणराज्य बनाने का संकल्प था और सामाजिक-आर्थिक न्याय की गारंटी दी गई थी। यही प्रस्ताव भारतीय संविधान की 'प्रस्तावना' का वैधानिक और दार्शनिक आधार बना। नेहरू रिपोर्ट 1928 मोतीलाल नेहरू से संबंधित है, जबकि कराची प्रस्ताव (1931) मौलिक अधिकारों पर केंद्रित था।

**प्रश्न 64: सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** नेहरू के काल में परमाणु ऊर्जा आयोग (AEC) की स्थापना 1948 में डॉ. होमी जहांगीर भाभा के नेतृत्व में की गई थी, लेकिन इसका मुख्य उद्देश्य 'परमाणु ऊर्जा का शांतिपूर्ण उपयोग' (बिजली और चिकित्सा हेतु) था, न कि परमाणु हथियार निर्माण। नेहरू वैश्विक परमाणु निशस्त्रीकरण के प्रबल समर्थक थे। अन्य विकल्प (IIT, UGC और सामुदायिक विकास) नेहरू युग की वास्तविक उपलब्धियां हैं।

**प्रश्न 65: सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** द्वितीय पंचवर्षीय योजना ने भारी उद्योगों पर बल दिया (महालनोबिस मॉडल)। निष्कर्ष 1 गलत है क्योंकि 'कृषि और सिंचाई' प्रथम योजना (1951-56) की मुख्य प्राथमिकता थी। द्वितीय योजना के दौरान ही सोवियत संघ, ब्रिटेन और जर्मनी के सहयोग से भिलाई, दुर्गापुर और राउरकेला में इस्पात कारखाने स्थापित किए गए थे ताकि भारत औद्योगिक रूप से आत्मनिर्भर बन सके।

**प्रश्न 66: सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** कथन 1 गलत है क्योंकि योजना आयोग एक 'संविधानेत्तर' (Non-Constitutional) और 'परामर्शदात्री' निकाय था, इसका उल्लेख संविधान के किसी अनुच्छेद में नहीं था। राष्ट्रीय विकास परिषद (NDC) का गठन राज्यों को योजना प्रक्रिया में शामिल करने के लिए किया गया था। प्रधानमंत्री इन दोनों ही संस्थाओं के प्रमुख होते थे ताकि केंद्र-राज्य समन्वय बना रहे। वर्तमान में योजना आयोग को 'नीति आयोग' से बदल दिया गया है।

**प्रश्न 67: सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** भिलाई (छत्तीसगढ़) और बोकारो (झारखंड) संयंत्र सोवियत संघ (USSR) के सहयोग से बने। राउरकेला (ओडिशा) पश्चिम जर्मनी के सहयोग से और दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल) ब्रिटेन के सहयोग से स्थापित किया गया। ये कारखाने द्वितीय और तृतीय पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान भारत के औद्योगिक गौरव के प्रतीक बने।

**प्रश्न 68: सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** विकल्प D पूर्णतः असत्य है क्योंकि तृतीय पंचवर्षीय योजना अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में **विफल** रही थी। इसके मुख्य कारण 1962 का भारत-चीन युद्ध, 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध और 1965-66 का भीषण अकाल था। इन संकटों के कारण ही 1966-69 के बीच 'योजना अवकाश' (Plan Holiday) घोषित करना पड़ा था। अन्य विकल्प (हैरोड-डोमर और गॉडगिल योजना) ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं।

**प्रश्न 69: सही उत्तर: D) A असत्य है, लेकिन R सत्य है।**

**कथन (A) (असत्य):** यह कथन पूरी तरह से गलत है और गुटनिरपेक्षता के संबंध में एक बहुत बड़ा भ्रम है। गुटनिरपेक्षता का अर्थ 'तटस्थता' (Neutrality) या 'अलगाववाद' (Isolationism) बिल्कुल नहीं था।

अंतर: 'तटस्थता' का अर्थ होता है युद्ध या अंतरराष्ट्रीय समस्याओं से पूरी तरह आँखें मूंद लेना या निष्क्रिय हो जाना (जैसे स्विट्जरलैंड की नीति)। इसके विपरीत, गुटनिरपेक्षता एक सक्रिय और गतिशील (Active and Dynamic) नीति थी। भारत ने कभी भी अंतरराष्ट्रीय मुद्दों से दूरी नहीं बनाई, बल्कि वैश्विक शांति,

वि-औपनिवेशीकरण (Decolonization) और रंगभेद के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बढ़-चढ़कर सक्रिय भूमिका निभाई।

**कारण (R) (सत्य):** यह कारण पूरी तरह सत्य है और नेहरू की विदेश नीति के मूल दर्शन को स्पष्ट करता है। नेहरू का दृढ़ विश्वास था कि यदि भारत किसी एक महाशक्ति के गुट (अमेरिकी या सोवियत संघ) में शामिल हो गया, तो वह अपनी संप्रभुता और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता खो देगा। इसलिए उन्होंने कहा कि भारत शीतयुद्ध के सैन्य गुटों से दूर रहेगा और प्रत्येक वैश्विक मुद्दे पर उसके गुण-दोष (Merit) के आधार पर पूरी तरह स्वतंत्र और निष्पक्ष निर्णय लेगा।

**निष्कर्ष:** चूंकि कथन (A) गुटनिरपेक्षता की गलत परिभाषा देता है और कारण (R) नेहरू के वास्तविक विचार को सही ढंग से प्रस्तुत करता है, इसलिए विकल्प D सही उत्तर है।

**प्रश्न 70: सही उत्तर: A) केवल 1 और 2**

**कथन 1 (सत्य):** पंचशील समझौता आधिकारिक रूप से 29 अप्रैल 1954 को बीजिंग में हस्ताक्षरित हुआ था। यह भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और चीन के प्रधानमंत्री चाउ एन-लाई (Zhou Enlai) के नेतृत्व में दोनों देशों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज था।

**कथन 2 (सत्य):** इस समझौते के पाँच मूल सिद्धांतों में सबसे पहला और मुख्य सिद्धांत 'एक-दूसरे की प्रादेशिक अखंडता और संप्रभुता का पारस्परिक सम्मान करना' था। इसके अलावा अन्य सिद्धांतों में अनाक्रमण, आंतरिक मामलों में अहस्तक्षेप, समानता और पारस्परिक लाभ तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व शामिल थे।

**कथन 3 (असत्य):** यह कथन ऐतिहासिक रूप से गलत है। वास्तव में, इस समझौते का पूरा नाम ही "भारत और चीन के बीच तिब्बत क्षेत्र (Tibet Region) और भारत के मध्य व्यापार और समागम पर समझौता" था। इस समझौते के माध्यम से भारत ने आधिकारिक रूप से तिब्बत को चीन का एक हिस्सा (Region of China) स्वीकार कर लिया था और वहाँ से अपने अतिरिक्त संप्रभु अधिकार (जैसे डाक-तार व्यवस्था और सैन्य चौकियाँ) पूरी तरह छोड़ दिए थे। भारत के इस कदम की दूरदर्शिता को लेकर आज भी राजनीतिक विश्लेषकों में तीखी बहस होती है।

**प्रश्न 71: सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** बांडुंग सम्मेलन 1955 में हुआ जिसने एफ्रो-एशियाई एकता की नींव रखी। गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का पहला औपचारिक शिखर सम्मेलन 1961 में बेलग्रेड में हुआ। चीन ने 20 अक्टूबर 1962 को भारत पर आक्रमण किया। 1956 में स्वेज नहर संकट के दौरान नेहरू ने ब्रिटेन और फ्रांस के विरुद्ध मिस्र का समर्थन कर वैश्विक शांति दूत की भूमिका निभाई थी।

**प्रश्न 72: सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** मार्च 1947 में, स्वतंत्रता से पाँच महीने पहले, नेहरू ने दिल्ली में एशियाई देशों का सम्मेलन बुलाया था। यह दर्शाता है कि नेहरू भारत को एशिया के भविष्य के रूप में देख रहे थे। दोनों निष्कर्ष सही हैं क्योंकि नेहरू ने औपनिवेशिक दासता से मुक्त हो रहे देशों को एकजुट करने का प्रयास किया था और भारत की अंतरिम सरकार ने तभी से स्वतंत्र विदेश नीति अपना ली थी।

**प्रश्न 73: सही उत्तर: B**

wincompete

**व्याख्या:** डॉ. बी.आर. अंबेडकर द्वारा तैयार 'हिंदू कोड बिल' का उद्देश्य हिंदू उत्तराधिकार, विवाह और तलाक के कानूनों को आधुनिक बनाना था। रूढ़िवादी कांग्रेसी नेताओं और राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद के कड़े विरोध के कारण इसे वापस लेना पड़ा, जिससे दुखी होकर अंबेडकर ने इस्तीफा दे दिया। बाद में नेहरू ने इसे चार अलग-अलग कानूनों (हिंदू विवाह, उत्तराधिकार आदि) के रूप में 1955-56 में पारित करवाया।

**प्रश्न 74: सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** कथन 3 गलत है क्योंकि नेहरू 'समान नागरिक संहिता' (UCC) के समर्थक तो थे, लेकिन उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों और अल्पसंख्यकों के संदेहों को देखते हुए इसे 'नीति निर्देशक तत्वों' में ही रहने दिया और अनिवार्य रूप से लागू नहीं किया। अस्पृश्यता अपराध अधिनियम और हिंदू विवाह अधिनियम नेहरू काल के क्रांतिकारी सामाजिक सुधार थे जिन्होंने समाज की पितृसत्तात्मक और जातिवादी जड़ों को कमजोर किया।

**प्रश्न 75: सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** विकल्प C असत्य है क्योंकि आचार्य विनोबा भावे द्वारा शुरू किया गया 'भूदान आंदोलन' पूरी तरह से **स्वैच्छिक और नैतिक** आधार पर था, न कि किसी सरकारी कानून पर। इसमें भूस्वामियों से अपनी जमीन का 1/6 हिस्सा दान करने की अपील की गई थी। शेष विकल्प सही हैं—भूमि सुधारों को अदालती चुनौती से बचाने के लिए ही संविधान में 'नौवीं अनुसूची' जोड़ी गई थी ताकि जमींदारी उन्मूलन को प्रभावी बनाया जा सके।

**प्रश्न 76: सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** कथन A असत्य है क्योंकि नेहरू ने हिंदू कोड बिल को लेकर अंबेडकर का सार्वजनिक समर्थन तो किया, लेकिन जब रूढ़िवादी विरोध बढ़ा तो उन्होंने बिल को वापस ले लिया या टाल दिया। इसी 'पीछे हटने' (Backtrack) के कारण डॉ. अंबेडकर ने 1951 में मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया था। नेहरू ने अंबेडकर को रोके रखने के लिए कड़े कदम नहीं उठाए थे। कारण R सत्य है क्योंकि यही वह विरोध था जिसने नेहरू को विवश किया था।

**प्रश्न 77: सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** सुकुमार सेन पहले चुनाव आयुक्त थे। कथन 2 गलत है क्योंकि उस समय भारत की साक्षरता दर मात्र **15-18%** के करीब थी। इसी कारण चुनाव आयोग ने 'चुनाव चिह्न' (Symbols) पद्धति का प्रयोग किया ताकि जो मतदाता पढ़ नहीं सकते, वे अपने पसंदीदा दल के चिह्न वाली मतपेटी में पर्ची डाल सकें। यह विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक प्रयोग की एक अनूठी चुनौती और समाधान था।

**प्रश्न 78: सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** पश्चिमी मीडिया और आलोचकों ने 1952 के चुनावों को 'इतिहास का सबसे बड़ा जुआ' कहा था क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं था कि एक गरीब और निरक्षर देश में लोकतंत्र सफल होगा। नेहरू ने 'वयस्क मताधिकार' (Universal Adult Franchise) पर अडिग रहकर सिद्ध किया कि लोकतंत्र के लिए साक्षरता से अधिक राजनैतिक चेतना महत्वपूर्ण है। कथन और कारण दोनों सत्य हैं और इस ऐतिहासिक घटना की व्याख्या करते हैं।

wincompete

**प्रश्न 79: सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** विकल्प D असंगत है। राज्यसभा के प्रथम सभापति **डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन** थे (क्योंकि वे भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति थे और उपराष्ट्रपति ही राज्यसभा का पदेन सभापति होता है)। डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे। अन्य विकल्प (जी.वी. मावलंकर - प्रथम स्पीकर, सुकुमार सेन - प्रथम चुनाव आयुक्त, 489 सीटें) ऐतिहासिक रूप से सटीक और परीक्षा उपयोगी तथ्य हैं।

**प्रश्न 80: सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** प्रथम चुनाव में कांग्रेस को भारी बहुमत मिला। निष्कर्ष 1 सही है क्योंकि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) 16 सीटें जीतकर दूसरे सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी (हालाँकि सीटों का अंतर बहुत बड़ा था)। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि निर्दलीय उम्मीदवारों को कुल **37 सीटें** प्राप्त हुई थीं, जो कि CPI और सोशलिस्ट पार्टी जैसे अन्य मुख्य दलों से भी अधिक थीं।

**प्रश्न 81: सही उत्तर - A**

**व्याख्या:** 'वैज्ञानिक नीति संकल्प' (SPR) 4 मार्च 1958 को जवाहरलाल नेहरू द्वारा संसद में प्रस्तुत किया गया था। इसका उद्देश्य देश में वैज्ञानिक शोध की नींव रखना और लोगों में तर्कशीलता पैदा करना था। कथन 3 गलत है क्योंकि परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE) को किसी मंत्रालय के अधीन नहीं रखा गया था, बल्कि यह सीधे प्रधानमंत्री के अधीन एक स्वतंत्र विभाग के रूप में कार्य करता था। यह नेहरू की विज्ञान को प्रशासनिक बाधाओं से मुक्त रखने की दूरगामी सोच का परिचायक था।

**प्रश्न 82: सही उत्तर: C) A सत्य है, लेकिन R असत्य है।**

**कथन (A) (सत्य):** पंडित नेहरू ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को केवल अकादमिक शोध या प्रयोगशालाओं (Laboratories) तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' (Scientific Temper) को भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास और राष्ट्रीय नियोजन (National Planning) का मुख्य आधार बनाया। इसी सोच के तहत उन्होंने योजना आयोग का गठन किया और देश में IITs, CSIR प्रयोगशालाओं तथा परमाणु ऊर्जा आयोग (AEC) जैसे शीर्ष संस्थानों की नींव रखी।

**कारण (R) (असत्य):** यह कारण तकनीकी रूप से गलत है क्योंकि इसमें प्रयुक्त एक शब्द वाक्य के अर्थ को पूरी तरह बदल देता है। कारण में लिखा है कि नेहरू मानते थे कि समस्याओं का समाधान "केवल आधुनिक तकनीक और विज्ञान से ही संभव नहीं है।"

**वास्तविक तथ्य:** इसके विपरीत, नेहरू का यह दृढ़ विश्वास था कि भारत की भूख, गरीबी, निरक्षरता और बेरोजगारी जैसी बुनियादी समस्याओं का समाधान केवल और केवल विज्ञान तथा आधुनिक तकनीक के माध्यम से ही संभव है।

1938 में राष्ट्रीय नियोजन समिति (National Planning Committee) के अध्यक्ष के रूप में भी उन्होंने स्पष्ट किया था कि विज्ञान के बिना भारत का औद्योगिक और कृषि विकास असंभव है। अतः 'नहीं' शब्द के कारण यह कारण (R) असत्य सिद्ध होता है।

**प्रश्न 83: सही उत्तर - B**

**व्याख्या:** डॉ. शांति स्वरूप भटनागर को भारत में 'शोध प्रयोगशालाओं का जनक' कहा जाता है। उन्होंने वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) के प्रथम महानिदेशक के रूप में कार्य किया। नेहरू के अटूट समर्थन से उन्होंने 1947 से 1955 के बीच देश भर में कई राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना की। विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान के सम्मान में ही भारत का सबसे प्रतिष्ठित विज्ञान पुरस्कार 'शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार' दिया जाता है।

wincompete

**प्रश्न 84: सही उत्तर - C**

व्याख्या: राजस्थान के झुंझुनूं जिले के पिलानी में 'केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान' (CEERI) की स्थापना वर्ष 1953 में की गई थी। यह CSIR के अंतर्गत आने वाली एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रयोगशाला है। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में स्वदेशी तकनीक का विकास करना था। राजस्थान में वैज्ञानिक आधारभूत ढांचे के विकास की दिशा में यह नेहरू युग का एक मील का पत्थर साबित हुआ, जिसने पिलानी को एक शैक्षणिक हब के रूप में प्रतिष्ठित किया।

**प्रश्न 85: सही उत्तर - C**

**व्याख्या:** भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का कालक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है। डॉ. भाभा ने 1945 में टाटा ट्रस्ट की मदद से TIFR (Nursery of Nuclear Science) की स्थापना की। स्वतंत्रता के बाद अगस्त 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग (AEC) बना। 1954 में परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE) का गठन हुआ और 1956 में एशिया का पहला परमाणु रिएक्टर 'अप्सरा' चालू हुआ। यह सुमेलन भारत की वैज्ञानिक प्रगति की क्रमिक यात्रा को दर्शाता है।

**प्रश्न 86: सही उत्तर - A**

**व्याख्या:** डॉ. भाभा की त्रि-स्तरीय रणनीति का मुख्य उद्देश्य भारत के विशाल 'थोरियम' भंडार का उपयोग करना था, न कि आयातित यूरेनियम पर निर्भरता। विकल्प A असंगत है क्योंकि रणनीति का लक्ष्य आत्मनिर्भरता था। प्रथम चरण में यूरेनियम से प्लूटोनियम बनाना, दूसरे चरण में उस प्लूटोनियम से अधिक ईंधन बनाना, और तीसरे चरण में थोरियम का उपयोग कर बिजली पैदा करना शामिल है। यह रणनीति आज भी भारत के परमाणु कार्यक्रम का आधार स्तंभ है।

**प्रश्न 87: सही उत्तर: D) कोई भी निष्कर्ष नहीं निकलता है।**

**निष्कर्ष 1 (नहीं निकलता है):** यद्यपि यह ऐतिहासिक तथ्य है कि भारत अपनी नीतिगत घोषणाओं में परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण और नागरिक उपयोग (जैसे बिजली उत्पादन, चिकित्सा) का समर्थक रहा है, लेकिन दिए गए कथन से सीधे तौर पर यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। परमाणु ऊर्जा आयोग (AEC) को सीधे प्रधानमंत्री के नियंत्रण में रखने का प्रशासनिक निर्णय केवल नागरिक उद्देश्यों को नहीं दर्शाता, बल्कि यह इसके सामरिक (Strategic) महत्व को भी रेखांकित करता है।

**निष्कर्ष 2 (नहीं निकलता है):** यह निष्कर्ष पूरी तरह तर्कहीन है। परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को देश के सर्वोच्च कार्यकारी प्रमुख (प्रधानमंत्री) के सीधे नियंत्रण में रखने का मुख्य कारण ही यह था कि इस अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र को उच्च स्तरीय सामरिक गोपनीयता (Strategic Secrecy), त्वरित निर्णय लेने की क्षमता और नौकरशाही के लालफीताशाही से दूर प्रशासनिक स्वायत्तता (Administrative Autonomy) प्रदान की जा सके। अतः यह कहना कि स्वायत्तता आवश्यक नहीं थी, प्रशासनिक व्यवस्था के विपरीत है।

**प्रश्न 88: सही उत्तर - D**

**व्याख्या:** वर्तमान 'भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र' (BARC) को इसकी स्थापना के समय 1954 में 'ट्रॉम्बे शोध केंद्र' (Atomic Energy Establishment, Trombay - AEET) के नाम से जाना जाता था। 1966 में डॉ. होमी जहांगीर भाभा की विमान दुर्घटना में असामयिक मृत्यु के बाद, उनके असाधारण योगदान को सम्मान देने के लिए 12 जनवरी 1967 को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इसका नाम बदलकर BARC कर दिया। यह भारत का सबसे बड़ा परमाणु अनुसंधान संस्थान है।

**प्रश्न 89: सही उत्तर - A**

व्याख्या: 1962 में INCOSPAR का गठन अंतरिक्ष शोध की दिशा में पहला कदम था। कथन 2 गलत है क्योंकि भारत का पहला रॉकेट प्रक्षेपण 21 नवंबर 1963 को 'थुम्बा' (केरल) से किया गया था, न कि श्रीहरिकोटा से। थुम्बा का चयन इसकी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति (Magnetic Equator के पास) के कारण किया गया था, जो वायुमंडलीय शोध के लिए महत्वपूर्ण थी। इसी केंद्र को अब 'विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र' (VSSC) के नाम से जाना जाता है।

**प्रश्न 90: सही उत्तर - A**

व्याख्या: डॉ. विक्रम साराभाई का स्पष्ट मानना था कि भारत को महाशक्तियों के साथ अंतरिक्ष की होड़ में शामिल होने की आवश्यकता नहीं है। उनके लिए अंतरिक्ष तकनीक एक विलासिता नहीं, बल्कि 'जरूरत' थी।

उन्होंने SITE (Satellite Instructional Television Experiment) जैसी परियोजनाओं के माध्यम से सिद्ध किया कि उपग्रहों का उपयोग गाँवों में कृषि और स्वास्थ्य की जानकारी पहुँचाने के लिए किया जा सकता है। कथन और कारण दोनों सत्य हैं और भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के मानवीय पक्ष को स्पष्ट करते हैं।

**प्रश्न 91: सही उत्तर - B**

व्याख्या: भारतीय अंतरिक्ष इतिहास की सबसे भावुक कर देने वाली तस्वीर 1963 की है, जहाँ रॉकेट के नोज कोन (Nose cone) को वैज्ञानिकों द्वारा **साइकिल** पर लादकर थुम्बा के चर्च परिसर (प्रारंभिक लॉन्च पैड) तक ले जाया गया था। यह चित्र उस समय के संसाधनों की घोर कमी और वैज्ञानिकों के अदम्य साहस को दर्शाता है। यह संदेश देता है कि भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम ऊँचे बजट से नहीं, बल्कि ऊँचे इरादों और स्वदेशी प्रतिभा से खड़ा हुआ है।

**प्रश्न 92: सही उत्तर - D**

व्याख्या: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) का मुख्यालय बेंगलुरु (कर्नाटक) में स्थित है। इसरो का गठन 15 अगस्त 1969 को INCOSPAR के पुनर्गठन के साथ हुआ था। यद्यपि प्रक्षेपण श्रीहरिकोटा से होते हैं और रॉकेट निर्माण तिरुवनंतपुरम में होता है, लेकिन संपूर्ण योजना और प्रशासनिक नियंत्रण बेंगलुरु स्थित अंतरिक्ष विभाग (Department of Space) और इसरो मुख्यालय से ही होता है। बेंगलुरु को भारत की 'स्पेस सिटी' भी कहा जाता है।

**प्रश्न 93: सही उत्तर - A**

व्याख्या: RPSC परीक्षाओं में IITs और उनके सहयोगी देशों का मिलान अक्सर पूछा जाता है। IIT बॉम्बे सोवियत संघ (UNESCO के माध्यम से) के सहयोग से बना। IIT मद्रास पश्चिम जर्मनी के सहयोग से, IIT कानपुर अमेरिका के सहयोग से और IIT दिल्ली ब्रिटेन के सहयोग से स्थापित हुए। यह नेहरू की 'गुटनिरपेक्ष नीति' की सफलता थी कि उन्होंने विश्व की सभी महाशक्तियों से भारत के तकनीकी विकास के लिए सर्वश्रेष्ठ सहयोग प्राप्त किया।

**प्रश्न 94: सही उत्तर - B**

व्याख्या: विकल्प C असंगत है क्योंकि 'भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद' (ICAR) का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है, मुंबई में नहीं। अन्य सभी तथ्य नेहरू काल की महान उपलब्धियां हैं: AIIMS (1956) उच्च स्तरीय चिकित्सा शोध हेतु बना, प्रथम IIM कोलकाता (1961) में प्रबंधन हेतु स्थापित हुआ, और प्रथम IIT खड़गपुर (1951) में बना। ICAR ने ही भारत में उन्नत बीजों और कृषि तकनीकों पर शोध कर 'हरित क्रांति' का मार्ग प्रशस्त किया था।

**प्रश्न 95: सही उत्तर: A) केवल निष्कर्ष 1 निकलता है।**

**निष्कर्ष 1 (निकलता है):** स्वतंत्रता के बाद भारत में भारी उद्योगों और योजनाबद्ध आर्थिक विकास (जैसे द्वितीय पंचवर्षीय योजना) की शुरुआत हुई। सार्वजनिक क्षेत्र (PSUs) के विशाल उपक्रमों और निजी क्षेत्र के बढ़ते उद्योगों को कुशलतापूर्वक संचालित करने के लिए तकनीकी विशेषज्ञों (इंजीनियरों) के साथ-साथ उच्च स्तरीय पेशेवर प्रबंधकों (Professional Managers) की अत्यंत आवश्यकता थी। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए 1961 में प्रथम दो IIMs की स्थापना की गई थी। अतः यह निष्कर्ष पूर्णतः तर्कसंगत है।

**निष्कर्ष 2 (नहीं निकलता है - तकनीकी त्रुटि):** इस निष्कर्ष में एक बहुत ही सूक्ष्म भाषाई और ऐतिहासिक त्रुटि है, जिसके कारण यह गलत हो जाता है।

त्रुटि क्या है?: निष्कर्ष में लिखा है कि इन संस्थानों के लिए भारत के बड़े औद्योगिक घरानों और "भारतीय उच्च शिक्षण संस्थानों" का सहयोग लिया गया था।

वास्तविक तथ्य: इन संस्थानों (IIMs) की स्थापना के समय पाठ्यक्रम, फैकल्टी और अकादमिक ढांचे को वैश्विक स्तर का बनाने के लिए भारतीय नहीं, बल्कि विदेशी उच्च शिक्षण संस्थानों का सहयोग लिया गया था।

IIM कलकत्ता के लिए अमेरिका के MIT स्लोन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट (MIT Sloan School of Management) और IIM अहमदाबाद के लिए हार्वर्ड बिजनेस स्कूल (Harvard Business School) का आधिकारिक सहयोग लिया गया था। (यद्यपि औद्योगिक घरानों जैसे लालभाई समूह का सहयोग सही है, परंतु भारतीय शिक्षण संस्थानों का सहयोग वाला हिस्सा गलत है)।

**प्रश्न 96: सही उत्तर - D**

**व्याख्या:** राजस्थान में उच्च तकनीकी शिक्षा की नींव के रूप में 1963 में 'मालवीय क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेज' (MREC) की स्थापना **जयपुर** में की गई थी। वर्तमान में इसे 'मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान' (MNIT) के रूप में जाना जाता है। यह उन क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेजों (REC) की श्रृंखला का हिस्सा था जिन्हें नेहरू सरकार ने देश के विभिन्न राज्यों में तकनीकी प्रतिभा को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया था। जयपुर का यह संस्थान आज भी राजस्थान का अग्रणी तकनीकी केंद्र है।

**प्रश्न 97: सही उत्तर - A**

**व्याख्या:** तीनों कथन सत्य और आधिकारिक हैं। भाखड़ा बांध विश्व का सबसे ऊँचा कंक्रीट गुरुत्वीय बांध है। हीराकुंड बांध महानदी पर स्थित विश्व का सबसे लंबा बांध है। चंबल परियोजना राजस्थान और मध्य प्रदेश की 50-50 प्रतिशत की भागीदारी वाली महत्वपूर्ण परियोजना है। ये सभी परियोजनाएं नेहरू के उस विजन का हिस्सा थीं जिसने भारत को खाद्य सुरक्षा दी और औद्योगिक बिजली की मांग को पूरा किया।

**प्रश्न 98: सही उत्तर - C**

व्याख्या: कथन (A) सत्य है क्योंकि राणा प्रताप सागर बांध चंबल परियोजना का हिस्सा है और चित्तौड़गढ़ (रावतभाटा) में स्थित है। लेकिन कारण (R) असत्य है क्योंकि यह बांध मुख्य रूप से 'जलविद्युत' (Hydro-electric) और सिंचाई के लिए बनाया गया था, न कि परमाणु ऊर्जा के लिए। यद्यपि इसके पास 'राजस्थान परमाणु बिजली घर' स्थित है जिसे जल की आवश्यकता होती है, लेकिन बांध का मूल तकनीकी उद्देश्य जलविद्युत उत्पादन है।

**प्रश्न 99: सही उत्तर - B**

व्याख्या: पैराग्राफ में चर्चित 'भाखड़ा-नांगल परियोजना' है। इसे पंडित नेहरू ने 'पुनर्जीवित भारत का नया मंदिर' कहा था। यह सतलुज नदी पर स्थित है और पंजाब, हरियाणा व राजस्थान की संयुक्त परियोजना है। राजस्थान के हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों को इस परियोजना से मिलने वाली सिंचाई ने मरुस्थल को उपजाऊ खेतों में बदल दिया है। यह भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना की महानतम उपलब्धि मानी जाती है।

**प्रश्न 100: सही उत्तर - B**

wincompete

व्याख्या: चंबल परियोजना के अंतर्गत राजस्थान में स्थित **राणा प्रताप सागर बांध** (रावतभाटा, चित्तौड़गढ़) की जल भराव क्षमता (Storage Capacity) सर्वाधिक है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा बांध माना जाता है। गांधी सागर बांध चंबल का सबसे बड़ा बांध है लेकिन वह मध्य प्रदेश में स्थित है। राजस्थान की भौगोलिक सीमा के भीतर राणा प्रताप सागर ही सर्वाधिक जल भराव वाला और तकनीकी रूप से सबसे महत्वपूर्ण बांध है।